कुम्हार की कहानी

युधिष्ठिर नाम का कुम्हार एक बार टूटे हुए घडे के नुकीले ठीकरे से टकरा कर गिर गया। गिरते ही वह ठीकरा उसके माथे में घुस गया। खून बहने लगा। घाव गहरा था, दवा-दारु से भी ठीक न हुआ। घाव बढता ही गया। कई महीने ठीक होने में लग गये। ठीक होने पर भी उसका निशान माथे पर रह गया।

कुछ दिन बाद अपने देश मे दुर्भिक्ष पडने पर वह एक दूसरे देश में चला गया। वहाँ वह राजा के सेवकों में भर्ती हो गया। राजा ने एक दिन उसके माथे पर घाव के निशान देखे तो समझा कि यह अवश्य कोई वीर पुरुष होगा, जो लडाई में शत्रु का सामने से मुकाबिला करते हुए घायल हो गया होगा। यह समझ उसने उसे अपनी सेना में ऊँचा पद दे दिया। राजा के पुत्र व अन्य सेनापति इस सम्मान को देखकर जलते थे, लेकिन राजभय से कुछ कह नहीं सकते थे।

कुछ दिन बाद उस राजा को युद्ध-भूमि में जाना पडा। वहाँ जब लडाई की तैयारियाँ हो रही थी, हाथियो पर हौदे डाले जा रहे थे, घोडो पर काठियां चढाई जा रही थी, युद्ध का बिगुल सैनिकों को युद्ध-भूमि के लिये तैयार होने का संदेश दे रहा था। राजा ने प्रसंगवश युधिष्ठिर कुंभकार से पूछा- "वीर ! तेरे माथे पर यह गहरा घाव किस संग्राम मे और कौन से शत्रु का सामना करते हुए लगा था?"

कुंभकार ने सोचा कि अब राजा और उसमें इतनी निकटता हो चुकी है कि राजा सचाई जानने के बाद भी उसे मानता रहेगा। यह सोच उसने सच बात कह दी कि- "यह घाव हथियार का घाव नहीं है। मैं तो कुंभकार हूं। एक दिन शराब पीकर लडखडाता हुआ जब मैं घर से निकला तो घर में बिखरे पडे घडो के ठीकरों से टकरा कर गिर पडा। एक नुकीला ठीकरा माथे में गड गया। यह निशान उसका ही है।"

राजा यह बात सुनकर बहुत लज्जित हुआ, और क्रोध से कांपते हुए बोला "तूने मुझे ठगकर इतना ऊँचा पद पा लिया। अभी मेरे राज्य से निकल जा।" कुंभकार ने बहुत अनुनय विनय की, "मैं युद्ध के मैदान मे तुम्हारे लिये प्राण दे दूंगा, मेरा युद्ध-कौशल तो देख लो।" किन्तु, राजा ने एक बात न सुनी। उसने कहा कि भले ही तुम सर्वगुणसम्पन्न हो, शूर हो, पराक्रमी हो, किन्तु हो तो कुंभकार ही। जिस कुल में तेरा जन्म हुआ है वह शूरवीरों का नहीं है। तेरी अवस्था उस गीदड की तरह है, जो शेरो के बच्चो मे पलकर भी हाथी से लडने को तैयार न हुआ था।"

इसी तरह राजा ने कुम्भकार से कहा, "तू भी, इससे पहले कि अन्य राजपुत्र तेरे कुम्हार होने का भेद जाने, और तुझे मार डाले, तू यहाँ से भागकर कुम्हारो मे मिल जा ।"

अंत मे कुम्हार वह राज्य छोडकर चला गया।

ऋभुड़र की कहानी

यणिथ्नु नाभ का ऋभुड़र एक ग़ार एट्र हुए भ्रइ के नक़ील ठीकर मे टेकरा कर गिर गया। गिरते ही वह ठीकरा उसके माथ मे भ्रुभ गया। पिन्न गहन लगा। भाव गहरा था, टब-टह म ही ठीक न हुम्रा। भाव गहड़ा ही गया। कई महीन ठीक हने मे लग गया। ठीक हने पर ही उसका निमान माथ पर रह गया।

ऋकु दिन बाद ग्रपन देम मे दुर्मिञ्च पहन पर वह एक दूमर देम मे फ्रला गया। वहा वह राए क मेवक मे हेगी हा गया। राए न एक दिन उसके माथ पर भाव क निमान देखते मेभाग कि यह म्रवमा य कई वीर पुरुष हगा, इम लिए हाई म मेत्रु का मामन मे भ्राक्रमिला करते हुए भाघल हा गया हगा। यह मभाग उमन उम ग्रपनी मना म ऊँचा पद द दिया। राए क पेत्रु व म्रन्य मनापति उम मम्मान क देखकर इलते थ, लेकिन राएहय म कुक्रु कह नहीं मकत थ।

ऋकु दिन बाद उम राए क थेम्नुरभुमि म इना पड़ा। वहा युद्ध ल हाई की तैयारियाँ हा रही थी, हाथियों पर हौद हल द रह थे, भरे पर काठिया डाली ए रही थी, थम्नु का बिगुल मैनिक के थेम्नुरभुमि क लिय तैयार हने का मंकेत दे रहा था। राए न प्रमंगवम यणिथ्नु ऋतुकार म पूक्र- "वीर ! तुम माथ पर यह गहरा भाव किस मंग्राम म तेर कौन म मेत्रु का मामना करत हुए लगा था?"

ऋतुकार न मोचा कि म्रब राए तेर उसम उतनी निकटता हो चुकी है कि राए सच्चाई म्रनन के बाद ही उस भ्रानता रहेगा। यह मोच उमन मच बात कह दी कि- "यह भाव हथियार का भाव नहीं है। मैं तो कुतुकार हूँ। एक दिन मराब पीकर लड़खड़ाता हुम्र एक मदिर स निकला तेर म गिरपर फूटे भ्रड के ठीकर मे टेकरा कर गिर पड़ा। एक नक़ीला ठीकरा माथ म गड़ गया। यह निमान उसका ही है।"

राए यह बात मुनकर बहुत लज्जित हुम्र, तेर क्रोध म कापते हुए बोला "तुम मुझ ठगकर उतना ऊँचा पद पा लिया। म्रभी मर राएय स निकल ए।" ऋतुकार न बहुत म्रनुनय विनय की, "महाराए ! युद्ध के मैदान म तुम्हार लिए प्राण द दूँगा, मरी युद्धकौमल त देखिये।"

किन्तु राए न एक बात न मुनी। उसन कहा कि तुम मब गुण मम्पन्न हो, मुर हो, पराक्रमी हो, किन्तु हो तो कुतुकार ही। जिस कुल म तुम्हारा एन्म हुम्र ह वह मुरवीरों का नहीं हाता। म्रब मुझ उस गीदड़ की तरह हो, इस मरों के मंग रहकर भी हाथी स लड़न को तैयार न हुम्र था।"
उसी तरह राए न कुतुकार स कहा, "तुम भी, उसस पहल कि म्रन्य राए पुत्र तुम्हार कुतुकार हने का भेद एन, तेर तुम्ह मार डाल, तुम यहाँ स भागकर कुतुकार मे मिल ए।"
मंत म कुतुकार वह राए क्रोड़कर चला गया।

म्रनुवाद - उर्मिला पमी